गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

समय सारणी

सत्र : 2024-2025

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम पूजा सिंह

शिक्षण विषय समय सारणी

महाविद्यालय अनुक्रमांक

समय-सारणी की आवश्यकता और उद्देश्य

विद्यालय के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए विद्यालय के कार्य की एक विस्तृत योजना का होना आवश्यक है। विद्यालय के प्रतिदिन के निर्धारित समय का प्रत्येक विषय क्रियाओं और कार्य-क्रमों के लिए ठीक उसी प्रकार से विभाजन हो। यदि विद्यालय के समय का उपसंगत ढंग से विभाजन किया जाय तो विद्यालय के समस्त कार्य में अराजकता और अव्यवस्था फैल जायेगी तथा एक ही कार्य की अनेक प्रकार की पुनरावृत्ति होने की सम्भावना रहेगी इस दोष को दूर करने के लिए ही समय सारिणी का निर्माण किया गया है। यदि विद्यालय में समय-सारणी का निर्माण किया गया है। यदि विद्यालय में समय-सारणी का निर्माण न किया जाए तो इसका परिणाम यह होगा कि प्रधानाध्यापक को यह पता नही चलेगा किस घण्टे मे कौन-कौन अध्यापक शिक्षण कार्य कर रहे है तथा कौन-कौन अध्यापक अपने उत्तरदायित्व को ठीक प्रकार से नही किया चूँकि समय सारिणी विद्यालय के समस्त कार्य का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है अतः उसकी सहायता से यह तथ्य ज्ञात किया जा सकता है कि विद्यालय में कौन-कौन सी गति विधियाँ हो रही हैं और कौन-कौन सी नही।

समय सारणी का महत्व :-

समय-सारणी द्वारा विद्यालय के सम्पूर्ण कार्यक्रम तथा विभिन्न गतिविधियों को समुचित स्थान मि है इसके द्वारा अध्यापकों और छात्रों को अपन निर्धारित समय का ज्ञान होना है समय सारणी इस बात का ज्ञान कराती है किस समय में कौन सा कार्य करना है समय सारणी द्वारा यह अनुभव लगाया जा सकता है किस अध्यापक को किस मात्रा में कितना और कैसा कार्य सौंपा गया है तो उसे कम अधिक दिया जा सकता है। इसके द्वारा विद्यालय के पढाये जाने वाले विभिन्न विषयों की सुविधानुसार समय मिल जाता है। समय सारणी छात्रों और अध्यापकों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करती है, क्योंकि यह उनमें नियमितता और निर्धारित अवधि में कार्य करने की प्रवृत्ति जागृत करती है।

समय सारणी निर्माण के सिद्धांत

समय-सारणी का निर्माण करते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता है और अध्यापकों को समय-सारणी का निर्माण करते समय निम्न बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

छात्रों के हित सम्बन्धित सिद्धांत

1. **रूचि और योग्यता का ध्यान :-** समय सारणी का निर्माण करते समय बालको की रूचि और योग्यता का ध्यान रखना चाहिए अन्य शब्दों को बालको प्राप्त होना चाहिए।

2. **क्षमताओं का ध्यान :-** यथासम्भव बालको की शारीरिक और मानसिक क्षमता का भी ध्यान रखा जाये घण्टे की अवधि अधिक नही होनी चाहिए क्योंकि घण्टो का अत्याधिक लम्बा होना हानिकारक है।

3. **व्यापकता :-** समय सारणी व्यापक होनी चाहिए जिससे छात्रो को अपनी इच्छा और रूचि के अनुसार विषय चुनने की सुविधा मिल सके।

4. **घण्टो के क्रम का ध्यान :-** समय सारणी का निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखा जाये कि प्रथम और अंतिम घण्टों में कठिन और थकान वाले विषयो को न रखे क्योकि प्रथम घण्टो में बालक/छात्र घर से चलकर आते है इससे थकान का आना स्वाभाविक है और वह कठिन विषय को थकान के कारण ठीक प्रकार से समझ नही पाते अतः इस विषय

में कठिन विषय न रखे जाये। इन घण्टो में सरल और रोचक विषय को रखना है आवश्यक

5. आयु का ध्यान :- घण्टो की अवधि को निर्धारित करते समय बालको की आयु का ध्यान रखा जाये। छोटे बालक 6 से 9 वर्ष तक के 10-20 मिनट ही एकाग्रचित होकर अध्ययन कर सकते है। अतः इनके लिए अधिक लम्बे घण्टे रखना उचित नही है। 12-14 वर्ष तक बालक 30-45 मिनट तक ही अपने चित्र को एकाग्र कर सकते है संक्षेप मे आवश्यकता से अधिक लम्बे घण्टे रखना उचित नही है।

6. विषय के क्रमो का ध्यान :- विषयो को क्रम के उद्देश्य मे ध्यान रखना चाहिए। यदि दो कठिन विषयों को लगातार रखा जाता है तो बालक शीघ्र ही थकान से ग्रस्त हो जायेगा और पढने लिखने में मन नही लगेगा। अतः कठिन विषय के पश्चात सरल विषय रखा जाये।

7. थकावट का ध्यान :- छात्रो की थकावट को दूर करने के लिए तथा उनमे ताजगी लाने के लिए सारणी में कम से कम दो मध्यान्तर या अवकाश की व्यवस्था होनी चाहिये।

8. **मौसम का ध्यान :-** इस सारणी का निर्माण करते समय मौसम का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि जलवायु बालको की कार्य क्षमता पर प्रभाव डालती है उदाहरण के लिए ग्रीष्म काल में (जुलाई से सितम्बर) तथा (मार्च से 30 मई) तक थकावट शीघ्र आ जाती है। तथा 10 बजे के बाद गर्मी शीघ्र पड़ने लगती है अतः विद्यालय में शिक्षा का समय प्रातः काल रखा जाये। और अध्ययन काल भी कम रखा जाये। जाड़ो का मौसम अच्छा होता है। अतः कार्य भी अधिक किया जा सकता है। ऐसी दशा में अध्ययन काल सुविधानुसार बढ़ाया जा सकता है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का ध्यान :- समय सारणी के निर्माण को ही स्थान न मिले बस बालको के बहुमुखी विकास के लिए पाठ्य पुस्तक सहगामी क्रियाओं को पर्याप्त समय मिलना चाहिए। अन्य शब्दो में छात्रो को समय-सारणी द्वारा खेल-कूद व्यायाम एवं वाद विवाद आदि क्रिया में भाग लेते है इसे अवसर प्राप्त होने चाहिए प्रत्येक अध्यापक दो विषयो से अधिक शिक्षण के लिए न दिया जाए। समय सारणी इस प्रकार की हो कि जिसमें अध्यापक तथा छात्रों के मध्य किसी प्रकार का संघर्ष न हो। समय सारणी निर्माण में ग्रामीण आवश्यकताओं को भी

ध्यान में रखा जाये। समय सारणी के निर्माण में इस बात का भी ध्यान रखा जाये कि अध्यापको और छात्रों में अधिक सम्पर्क की सम्भावना है।

समय सारणी के निर्माण में कठिनाईया एवं विवरण

किसी भी विद्यालय की समय सारणी का निर्माण करना भी कोई सरल कार्य नही है इसके निर्माण में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कुछ प्रमुख विवरण एवं कठिनाईया निम्न है।

अध्यापको का आभाव :-

समय सारणी का निर्माण करते समय सबसे प्रमुख कठिनाइयो का अभाव है। अध्यापको के अभाव के कारण समय सारणी के निर्माण सिद्धान्तों को नही अपनाया जा सकता परिणाम स्वरूप छात्रो को उनके रुचि के अनुकुल विषय नही मिल पाते और इस प्रकार अध्यापक भी अपनी रुचि के अनुसार शिक्षण अवसर प्राप्त नही हो पाते इसके निवारणार्थ ध्यान दिया जाये।

कक्षाओं का आभाव :-

जब विद्यालय के पर्याप्त कमरे विशेष कक्ष नही होते है तब समय सारणी का करना कठिन हो जाता है।

दिवसो के क्रम का ध्यान :-

इस सारणी में दिवसो का विशेष महत्व है दिवसो से क्रम को भी ध्यान रखना चाहिए सप्ताह के दिनो में शनिवार या सोमवार जिनमे छात्रों के मस्तिष्क में छुट्टी का ध्यान रहता है अतः इन दिनो छात्रो को ऐसा कार्य न दिया जाये जिनमें अधिक श्रम करना पड़े।

अध्यापको के हित सम्बंधी सिद्धांत :-

समय सारणी का निर्माण करते समय छात्र हित के साथ - साथ अध्यापक की आवश्यकताओं के कठिनाईयों को भी ध्यान में रखा जाये। इस विषय मे निम्न बातो को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

1. इस बात का अवश्य ध्यान रखा जाये कि किसी अध्यापक को लगातार एक जैसा कार्य न करना पड़ जाये।

2. अध्यापक को उनकी रुचि और योग्यता के आधार पर ही कार्य सौंपा जाये।

3. अध्यापको पर कार्य भार यथा सम्भव समान रहे कार्य भार का असमान वितरण अध्यापको में असन्तोष को जन्म देता है।

4. अध्यापक की शारीरिक योग्यताएँ सीमाओं तथा मनोवृत्तियों को भी ध्यान में रखा जाए।

5. किसी अध्यापक को शिक्षण के लिए लगातार घण्टे न दिया जाये बीच में एक घण्टा खाली देना भी आवश्यक है।

भौतिक साधनो का आभाव :- पर्याप्त फर्नीचर अध्यापक कक्ष तथा पुस्तकालय आदि का आभाव भी कठिनाई है अगर विद्यालय में ऐसे साधनों का आभाव है। तो समय सारणी के निर्माण में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। अतः इस आभावो की पूर्ति की जाए।

विद्यालय में छात्रो की अधिक संख्या :-

जब विद्यालय में छात्रों की संख्या अधिक होती है तो समय सारणी बनाने में विशेष असुविधा होती है अतः छात्र संख्या विद्यालय क्षमता के अनुसार होनी चाहिए।

अंशकालीन अध्यापको की नियुक्ति :-

अंशकालीन अध्यापको की नियुक्ति के कारण समय-सारणी बनाने में भी बाधाएँ आती है क्योंकि इन्हें समय-सारणी पर प्रशिक्षण

संस्थाओं में जाना पड़ता है। अतः स्थायी अध्यापक ही नियुक्त किया जाये अन्ततः सभी समस्या का समाधान उचित रीति से किया जाये जिससे समस्याओं का निवारण हो सके।

प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय की समय-सारणी :-

प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा में समन्वय को का सिद्धांत अपनाया जाता है। इस समय-सारणी के निर्माण में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है अतः समय नियुक्त है तो वह विद्यालय सम्बंधी अपने कार्य देखे कि बालको को अध्ययन कराये एक अध्यापक के रहने पर भी उत्पन्न होती है कोई विशेष अन्तर नही पड़ता क्योंकि कक्षाएँ 4-5 तक चलती है और विषय लगभग सब पढाने होते है। ऐसी दशा में एक या दो अध्यापिकाएँ समय-सारणी विद्यालय के लिए बनना आवश्यक होता है।

माध्यमिक एवं उच्चतम विद्यालयों की समय सारणी :-

माध्यमिक एवं उच्चतम विद्यालयों मे शिक्षा के समय का सिद्धान्त रहता ही है परन्तु माध्यमिक एवं पूर्व माध्यमिक की तरह समय सारणी के निर्माण में सामूहिक सफाई कला प्रार्थना आदि का समावेश नही किया जाता है।

माध्यमिक से होकर उच्चतम विद्यालयों में अनिवार्य है तो कक्षा प्रारम्भ होने से ही प्रार्थना या किसी सूचक के लिए सबको इकट्ठा करना उच्चतम है इन सबके लिए प्रयोजन पहले से ही निर्धारित रहता है। जैसे सफाई के लिए कर्मचारी नियुक्त होना।

प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से एक अध्यापिकीय एवं द्वि अध्यापिकीय की समय सारणी की आवश्यकता :-

प्रजातंत्रात्मक देश में शिक्षा का विशेष महत्व होता है। हमारे देश में भी प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणाली को अपनाया जाता है। इस कारण भावो में अनेक प्राथमिक पाठशालों में एक से अधिक अध्यापको की नियुक्ति नही हो पाती अतः समय विभाग चक्र में कला एवं सामूहिक सफाई प्रार्थना, प्रवचन विक्षम एवं राष्ट्रगान आदि का भी समावेश किया जाता है। प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के समय के निर्माण विषय के घण्टो को प्रारम्भ से पूर्व इन सभी प्रक्रिया का होना अनिवार्य है।

एक अध्यापकीय एवं द्वि-अध्यापकीय समय सारणी में शिक्षा :-

इनमे दो शिफ्टो का प्रयोग किया जाता है एक शिफ्ट प्रातः काल लगायी जा सकती है तथा दूसरी शिफ्ट शेष समय में इस प्रकार की व्यवस्था द्वारा एक या दो अध्यापक छात्रो को ठीक प्रकार से पढा सकेगा परन्तु दो शिफ्टो का प्रयोग कर पढाना उचित नही है।

एक कक्षा को हस्तकाल या चित्रकला का कार्य देखकर अन्य कक्षा में शिक्षण कार्य किया जा सकता है। शारीरिक शिक्षा, संगति तथा सामान्य विज्ञान की सम्मिलित कक्षाये भी चलायी जा सकती है, कक्षा प्रणाली का भी प्रयोग किया जा सकता है। एक या दो अध्यापको वाले विद्यालय में बालको से लिखित कार्य जैसे सुलेख नकल गिनती लिखने का कार्य आदि अधिक कराया जाना चाहिए। एक या दो अध्यापको वाले विद्यालय में शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग कर पढाया जा सकता है।